ISSN: 2278-1439, Volume 06, Issue 01, No. 11, July-December 2016, Page No. 25-27

homepage: www.vcebhopal.ac.in

Research Pool

An International Interdisciplinary Journal

प्राचार्य एवं शिक्षकों के मध्य समन्वय में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन

नीलेश कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक
जाकिर हुसेन कॉलेज, बुरहानपुर (म.प्र.)
Email: neeleshkumar@gmail.com

प्रस्तावनाः

प्रमुख रूप है। सामान्यतया उसका आशय ऐसे व्यवहार से लिया जाता है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति या समूह मिलकर किसी लक्ष्य को मिलकर को प्राप्त करने या किसी कार्य को निष्पादित करने का प्रयास करते है।

अध्ययन के उद्देश्यः

- भोपाल के शासकीय विद्यालयों के प्रार्चायों का शिक्षकों के साथ समन्वय में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना।
- भोपाल के शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों का प्रार्चायों के साथ समन्वय में आने वााली कठिनाइयों का अध्ययन करना।
- भोपाल के अशासकीय विद्यालयों के प्रार्चायों का शिक्षकों के साथ समन्वय में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना।
- भोपाल के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के प्रार्चायों का शिक्षकों के साथ समन्वय में आने वाली कठिनाइयों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँः

- भोपाल के शासकीय एवं आशसकीय विद्यालयों के प्रार्चायों का शिक्षकों के साथ समन्वय में आने वाली कठिनाइों में कोई सार्थक अंतर नही होता है।
- भोपाल के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों का प्रार्चायों के साथ समन्वय में आने वाली कठिनाइयों में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।

न्यादर्श चयनः

प्रस्तुत अध्ययन हेतु भोपाल के कुल 20 माध्यमिक विद्यालयों से जिसमें ये 10 विद्यालय शासकीय एवं 10 विद्यालय अशासकीय हैं, कुल 20 प्राचार्यों का चयन किया गया।

प्रत्येक विद्यालय से 2 शिक्षकों को भी चयनित किया गया। इस प्रकार कुल 40 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। सम्पूर्ण न्यादर्श (विद्यालय एवं अध्यापक) का चयन दैव निर्देशन पद्धति से चयनित किया गया।

संबंधित साहित्य के अवलोकन से प्राप्त निष्कर्षः

- प्रधानाचार्य का अध्यापक संबंधित प्रतिबल झुकाव तथा प्रशासनिक प्रभाविता के मध्य कोई अर्थपूर्ण संबंध नहीं पाया गया।
- प्रधानाचार्य का विद्यार्थियों से संबंधित प्रतिबल झुकाव तथा प्रशासनिक प्रभाविता के मध्य कोई अर्थपूर्ण संबंध नही पाया गया।
- प्रशासनिक प्रभाविता के साथ प्रधानाचार्य के प्राप्ति बल झुकाव का अर्थपूर्ण संबंध नही पाया गया।
- प्रधानाचार्य का समुदाय से संबंधित प्रतिबल झुकाव तथा प्रशासनिक प्रभावित के मध्य कोई अर्थपूर्ण संबंध नहीं पाया गया।

उपकरणः

प्राचार्यों एवं शिक्षकों के मध्य समन्वय में आने वाली कठिनाइयों को जानने हेतु विद्यालय प्राचार्यों एवं शिक्षकों हेतु एक – एक प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

इस हेतु शोध निर्देशक मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाशस्त्रियों, पूर्व प्राध्यापक आदि विषय विशेषज्ञों का सहयोग लिया गया।

शोध–विधिः

अनुसंधान के लिए नवीन एवं अज्ञात तथ्य संकलित करने के लिये विधि एवं उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। विधि एवं उपकरण की उपयुक्ता के अभाव में दन्तों के संकलन विश्लेषण एवं निष्कर्ष न तो विश्वसनीय होते हैं और न ही व्यावहारिक।

त्रुटिपूर्ण विधि के चयन से शोधकर्त्ता की विश्वसनीयता, वैधता और योग्यता का ह्रास होता है इस लिये प्रत्येक अध्ययन हेतु उपयुक्त प्रविधि का चयन आवश्यक है।

शोधकार्य में अध्ययन का महत्व इस बात पर आधारित होता है कि उस अध्ययन के निष्कर्ष का व्यवहारिक उपयोग हो सके। यह तभी संभव है जब अध्ययन के लिये उपयुक्त विधि एवं उपकरण आदि का चयन किया जाये।

निष्कर्षः

इसके निष्कर्ष इस प्रकार हैं

- भोपाल के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के प्राचायों का शिक्षकों के साथ समन्वय में आने वाली कठिनाइयों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालयों के प्राचार्यो एवं अशासकीय विद्यालयों के प्राचार्यो का शिक्षको के साथ समन्वयमें आने वाली कठिनाईयों के प्राप्तांको का मध्यमान अन्तर 15:20 तथा 'टी' मान 10.52 प्राप्त हुआ हैं जो कि 0.01 स्तर पर साथर्क हैं एवं यह इंगित करता है कि शासकीय विद्यालयों के प्राचायों का शिक्षकों के साथ समवंय में आने वाली कठिनाइयों में सार्थक रूप से भिन्न्ता है (अतः भोपाल के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयो के शिक्षकों का प्राचायों के साथ समन्वयमें आने वाली कठिनाइयों में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।

  उस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों का प्राचार्यो के साथ समन्वयमें आने वाली कठिनाइयों के प्राप्ताकों का मध्यमान अतंर 15:00 तथा 'टी' मान 14.7 प्राप्त हुआ है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक हैं एवं यह इंगित करता है कि शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों का प्राचार्यो के साथ समन्वय में आने वाली कठिनाइयों में सार्थक रूप से भिन्नता है।

सुझावः

- विद्यालय में आपसी अन्तः क्रिया के दौरान उचित भाषा का प्रयोग करें।
- रूचिनुसार अतिरिक्त कार्यभार का वितरण किया जाना चाहिऐ।
- शिक्षक को विद्यालय प्रशासन से तालमेल बनाकर रखना चाहिए जिससे वह पाठ संबंधी उपलब्ध सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग कर सके।
- रिक्त क्लॉसों का सदुपयोग करें तथा व्यर्थ की बातचीत व आलोचना से बचें।
- समुचित संवाद करें।
- विद्यालय प्रबंधन में अध्यापकों की सहभागिता बताये तथा अधिकारों का विवरण हो।
- अध्यापकों को स्वतंत्र प्रभार एवं अधिकार प्रदान करें।
- अध्यापकों को भी अनुशासन में रहना चाहिए।

समय-समय पर विद्यालय प्रशासन अथवा प्राचार्य द्वारा किया गया मूल्यांकन पक्षपातपूर्ण न होकर योग्यता आधारित हो।